SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भाषा विज्ञान की दृष्टि से हिंदी और खोरठा का वाक्य विन्यास

सर्वजीत कुमार, शोधार्थी, **सुनील कुमार दुबे,** पी–एचडी, हिंदी विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
सर्वजीत कुमार, शोधार्थी
सुनील कुमार दुबे, पी–एचडी
E-mail : sarwajeet98kumar@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/12/2025
Revised on : 13/02/2026
Accepted on : 22/02/2026
Overall Similarity : 00% on 14/02/2026

शोध सार

यह शोध हिंदी और खोरठा भाषाओं के वाक्य–विन्यास का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। हिंदी एक मानकीकृत आधुनिक आर्य भाषा है, जबकि खोरठा मुख्यतः झारखंड क्षेत्र में बोली जाने वाली प्रमुख लोकभाषा है, जिसका प्रयोग विशेष रूप से हजारीबाग, बोकारो, गिरिडीह आदि क्षेत्रों में व्यापक रूप से होता है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य दोनों भाषाओं की वाक्य–संरचना, पदक्रम, वाक्य–भेद, क्रिया–रूप तथा वाच्य–प्रयोग का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण करना है। वाक्य–विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है, जो वाक्य की संरचना, पदों के क्रम और उनके पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करती है। परंपरागत भारतीय भाषाशास्त्र में वाक्य और पद के संबंध को लेकर अभिहितान्वयवाद तथा अन्विताभिधानवाद जैसे सिद्धांत मिलते हैं, जिनमें वाक्य की संरचनात्मक और अर्थगत सत्ता पर विचार किया गया है। आधुनिक भाषाविज्ञान वाक्य को अर्थ की लघुत्तम पूर्ण इकाई मानता है। इसी आधार पर प्रस्तुत शोध में हिंदी और खोरठा की वाक्यगत संरचना का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है। पदक्रम की दृष्टि से दोनों भाषाएँ सामान्यतः कर्ता. कर्म . क्रिया क्रम का अनुसरण करती हैं। हिंदी में कारक–चिह्न पृथक रूप में प्रयुक्त होते हैं, जिससे पदक्रम अपेक्षाकृत स्थिर रहता है, जबकि खोरठा में कारक–चिह्न शब्द से संयुक्त रूप में भी मिलते हैं, जिससे परंपरागत रूप में पद–परिवर्तन की कुछ स्वतंत्रता दिखाई देती है तथापि हिंदी के निरंतर संपर्क के कारण खोरठा में भी पदक्रम की स्थिरता बढ़ी है। वाक्य–भेद की दृष्टि से दोनों भाषाओं में आकृति, रचना, अर्थ और क्रिया–आधारित वर्गीकरण पाए जाते हैं। सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों की संरचना दोनों भाषाओं में समान रूप से मिलती है। अर्थ–आधारित वर्गीकरण जैसे विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, इच्छावाचक, संकेतवाचक,

संदेहवाचक तथा आज्ञावाचक वाक्य दोनों भाषाओं में विद्यमान हैं, यद्यपि रूप–प्रयोग में स्थानीय भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। क्रिया–प्रयोग की दृष्टि से भी कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य की संरचनाएँ दोनों भाषाओं में मिलती हैं। हिंदी में सहायक क्रियाएँ 'है, था, होगा' आदि रूपों में प्रयुक्त होती हैं, जबकि खोरठा में 'हइ, हतो, होइत' जैसे रूप प्रचलित हैं। निषेध चिह्न 'नहीं' (हिंदी) और 'नाय' (खोरठा) दोनों भाषाओं की भिन्न संरचनात्मक पहचान को स्पष्ट करते हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी और खोरठा की वाक्य–संरचना में मूलभूत समानता होने के बावजूद रूपात्मक और ध्वन्यात्मक स्तर पर स्पष्ट अंतर मौजूद हैं। हिंदी के मानकीकरण और प्रशासनिक प्रभाव ने खोरठा के वाक्य–विन्यास को भी प्रभावित किया है। यह तुलनात्मक अध्ययन न केवल क्षेत्रीय भाषाओं की संरचनात्मक समझ को समृद्ध करता है, बल्कि भारतीय आर्य भाषाओं के अंतर्संबंधों को भी स्पष्ट करता है।

मुख्य शब्द

वाक्य–विन्यास, भाषा, वाक्य–भेद, वाच्य.

वाक्य विज्ञान भाषा की वाक्यगत संरचना का विशद एवं सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करता है। भाषा विज्ञान की इस शाखा में वाक्य–गठन के स्वरूप एवं वाक्य बनाने की प्रक्रिया का बारीकी से अध्ययन किया जाता है। इस विषय में वाक्य की परिभाषा, वाक्य की संरचना, वाक्य में पद–विन्यास संरचना एवं अर्थ की दृष्टि से वाक्य–भेद, वाक्यों का विभाजन, वाक्य में अर्थ–परिवर्तन और उसकी दिशाओं आदि का समग्रता में अध्ययन किया जाता है। सामान्यतः यह माना जाता है कि ''वाक्य प्रायः सार्थक शब्दों अथवा पदों का समूह है जो भावों को व्यक्त करने में अपने आप में पूर्ण हैं।''[1] वस्तुतः वाक्य सार्थक पदों का समूह है या पद वाक्य की सार्थक इकाई है जो स्पष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति में सहयोग देते हैं। इसे लेकर प्राचीन काल से ही वैयाकरणों में मतभेद रहा है। भारतीय विद्वान पतंजलि एवं उनके समकालीन यूरोपीय विद्वान थ्रैक्स अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द व पद को वाक्य मानते हैं।

पद एवं वाक्य के बीच के संबंध को लेकर मीमांसाकारों में मतभेद रहा है। इस विषय को लेकर इनमें दो मत प्रचलित हैं: 1 अभिहितान्वयवाद और 2 अन्विताभिधानवाद।

1. **अभिहतान्वयवादः** अभिहतान्वयवाद के प्रणेता आचार्य कुमरिल भट्ट हैं। इन्होंने वाक्य में पद की सत्ता की श्रेष्ठता स्वीकार की है, फलतः उनकी इस अवधारणा को पदवाद भी कहा जाता है। इसके अनुसार ''वाक्य पदों या अथवा शब्दों के गठन से बनता है। पद अपने अर्थ को कहते हैं और वाक्य उनका अन्वय करता है।''[2]
2. **अन्विताभिधानवादः** इस वाद के प्रवर्तक कुमारिल भट्ट के शिष्य प्रभाकर गुरु हुए। इनके अनुसार– ''वाक्य की ही सार्थक सत्ता मूल है और पद उसके तोड़े हुए अंश हैं।''[3] इस अवधारणा को वाक्यवाद भी कहते हैं। इस अवधारणा के अनुसार वाक्य की ही मूल सत्ता है। वाक्यों को ही तोड़कर शब्दों एवं पदों की प्राप्ति होती है। हमारी भावनाएँ अथवा हमारे वैचारिक चिंतन की परकोटियाँ वाक्यों में ही अभिव्यक्ति पाती हैं। सोचने और बोलने के क्रम में अथवा साधारण बोलचाल के समय व्यक्ति विभन्न पदों को जोड़ने में नहीं लगा रहता है, बल्कि सहजता से वह पूरा वाक्य बोल जाता है। दूसरे शब्दों में कोई भी सवाल या जवाब अथवा कोई भी भाव–प्रसंग या विचार–शृंखला सहजता के साथ वाक्यों में अभिव्यक्ति पाती चलती है। वाक्य विधान में स्फोट के पूर्व चयन की प्रक्रिया इतनी सहज और प्रवाहपूर्ण होती है कि वाक्य–प्रयोग में कहीं भी व्यवधान नहीं होता। पदों की सत्ता तो बाद में भाषण के पश्चात उभरकर आती है और यह स्पष्ट होता है कि यह संज्ञा पद है, यह विशेषण पद है अथवा यह क्रिया पद है। वस्तुतः आधुनिक भाषाविज्ञान अर्थ की दृष्टि से वाक्य को ही भाषिक अभिव्यक्ति की लघु इकाई मानता है और इस दृष्टि से अन्विताभिधानवाद भाषाविज्ञान के नियमों के अधिक अनुकूल है। व्याकरण की दृष्टि से भाषा की न्यूनतम इकाई ध्वनि को अवश्य माना जा सकता है, किंतु अर्थ की अभिव्यक्ति की दृष्टि से भाषा की लघुत्तम इकाई वाक्य ही है।

वाक्य की परिभाषा

वाक्य के संदर्भ में उपरोक्त विवेचन से दो बातें स्पष्ट हैं– पहली बात यह कि वाक्य शब्दों का समूह है दूसरी बात यह कि वाक्य अर्थ की दृष्टि से पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाला भाषा की लघुत्तम इकाई है। वाक्य को शब्द अथवा पदों का समूह मात्र मान लेना पर्याप्त नहीं है। वाक्य भाषा के अखंड प्रवाह का भावांश है। दूसरी बात यह कि शब्द अथवा पद वाक्य के कृत्रिम खंड हैं जिन्हें व्याकरणिक दृष्टि से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का नाम दे दिया गया है। संसार में कुछेक भाषाएँ ऐसी भी हैं, जिनके वाक्यों में ऐसा व्याकरणिक विभाजन नहीं हुआ है दूसरी बात यह कि वाक्य शब्दों का समूह है, ऐसा अक्षरशः मान लेना भी गलत होगा। अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी खोरठा सहित कई ऐसी भाषाएँ हैं जिनमें संवाद के स्तर पर एक–एक शब्द के पूर्ण वाक्य देखे जाते हैं। जैसे–

राम–क्या तुमने भोजन कर लिया?

सुधीर–हाँ।

राम–स्कुल कब जाओगे?

सुधीर–कल! और तुम?

राम–परसो।

रमेश – क्यों?

मोहन– मेरा गृहकार्य पूरा नहीं हो पाया है।

उपरोक्त संवाद में हाँ, कल, परसो जैसे वाक्य एक पदवाची होकर भी अपने संदर्भ में पूर्ण अर्थ देने में सक्षम हैं। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना अपेक्षित होगा कि वाक्य के संदर्भ में पूर्ण अर्थ की अवधारणा भी त्रुटिपूर्ण है। भाषा–प्रवाह के क्रम में वाक्य भाषांश ही हैं और वे भावांश ही अभिव्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए किसी कहानी के इस वाक्य को उसके प्रसंग से अलग करते हुए रखकर देखा जाए– 'उसने उससे वह बात वहीं कह दी।' इस वाक्य में व्याकरणिक दृष्टि से कोई त्रुटि नहीं है और न ही किसी प्रकार का अधूरापन है, फिर भी यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि किसने किससे कौन सी बात कह दी। यहाँ स्पष्ट अर्थ की प्रतीति के लिए संदर्भ की जानकारी आवश्यक है तथा संदर्भ ज्ञान वाक्य–समूह अथवा 'प्रोक्ति' से ही संभव है। अतः स्पष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति की दृष्टि से वाक्य भी हमेशा पूर्ण अर्थ देने में सक्षम नहीं होता है। भाषा वैज्ञानिकों ने वाक्य को अपने–अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। यहाँ कुछ प्रमुख परिभाषाओं का उल्लेख अपेक्षित होगा।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार– "वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है, जिसमें एक या एक से अधिक शब्द (पद) होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्यावहारिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में आशय पूर्ण होते हैं। साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कम से कम एक सामापिका क्रिया अवश्य होती है।"[4]

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी वाक्य की संक्षिप्त एवं सटीक परिभाषा इन शब्दों में देते हैं– "भाषा की लघुतम पूर्ण सार्थक इकाई को वाक्य कहते हैं।"[5]

डॉ. राजमणि शर्मा के शब्दों में– "वाक्य रुपिमों का वह उपक्रम है जो किसी कथ्य या कथ्यांश के पूर्ण अर्थ की प्राप्ति कराता है।"[6]

डॉ. देवेंद्र प्रसाद सिंह वाक्य को परिभाषित करते हुए लिखते हैं– "व्याकरणिक दृष्टि से एकपदीय या बहुपदीय भाषिक इकाई (भाषांश), जिससे अभीष्ट अर्थ की प्रतीति होती है, वाक्य कहते हैं।"[7]

वाक्य के अनिवार्य तत्त्व

भाषा वैज्ञानिकों ने वाक्य के लिए कुछ अनिवार्य शर्तों की भी चर्चा की है। वाक्य में योग्यता होनी चाहिए। योग्यता से तात्पर्य यह है कि वाक्य के पदों में आपसी संगति होनी चाहिए। असंगति की स्थिति में सार्थक शब्द वाक्य में उपस्थित होकर भी अपेक्षित अर्थ प्रदान करनें मे अक्षम होते हैं। इसके लिए जरूरी है कि पदों के परस्पर अन्वय के समय किसी प्रकार का व्यतिरेक उपस्थित न हो। यह व्यतिरेक दो तरह का हो सकता है– पहला अर्थगत

व्यतिरेक जिसके अंतर्गत पदों में अर्थगत असंगति होती है। जैसे– 'गाय पेड़ पर चढ़ गई।' 'गधा भाषण दे रहा है।' इन वाक्यों में सारे शब्द सार्थक हैं, बावजूद इसके अर्थगत असंगति के कारण कथन में विश्वसनीयता नहीं होने के कारण सामान्य तौर पर इन्हें वाक्य नहीं मान सकते हैं। वह आग से अपने फूल–पौधों को सींच रहा था। इस वाक्य के भी सारे शब्द सार्थक हैं, किंतु अर्थगत असंगति यहाँ इस पद–समूह को वाक्य मानने में बाधा उपस्थित करती है दूसरा व्यतिरेक व्याकरणगत भी हो सकता है। हर भाषा के अपने कुछ व्याकरणिक नियम होते हैं। पदों का सार्थक होना ही पर्याप्त नहीं होता है, उनमें व्याकरणिक नियमों की एकरूपता भी होनी चाहिए। यथा– 'लड़की गाना गा रहा है।' 'सभी पुरुष नाच रही थी।' इन दोनों वाक्यों में व्याकरणिक त्रुटियाँ होने के कारण इनमें वाक्यगत योग्यता का अभाव माना जाएगा। पुनः वाक्य में आकांक्षा की तृप्ति की क्षमता होनी चाहिए। ''आकांक्षा का तात्पर्य है इच्छा अर्थात जानने की इच्छाा या जिज्ञासा। वाक्य में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वह पूरा अर्थ दे।''8 यद्यपि वाक्यगत यह योग्यता पूरी तरह विवादरहित नहीं हैं, तथापि भी भावांश के स्तर पर ही सही, जिज्ञासा तृप्ति की योग्यता जरूरी है। वाक्य के लिए अंतिम योग्यता उसमें निहित आसक्ति या सन्निधि का माना गया है। आसक्ति अथवा सन्निधि का आशय यह है कि बोलते समय पदों में पदक्रम एवं कालक्रमिकता का ध्यान अवश्य रखा जाए। एक पद के उच्चारण के बाद दूसरे पद के उच्चारण में अधिक समय नहीं लगना चाहिए। 'संजीव घर गया।' वाक्य में यदि 'संजीव पद का उच्चारण आज किया जाए, 'घर' पद का उच्चारण कल किया जाए और 'गया' पद का उच्चारण उसके एक दिन बाद किया जाए तो वाक्य में अर्थ की स्पष्टता ही समाप्त हो जाएगी। इस प्रकार वाक्य के लिए उपरोक्त गुणों को ध्यान में रखते हुए आचार्य विश्वनाथ ने '' 'योग्यता', 'आकांक्षा' और आसक्ति से युक्त पदों के समूह को वाक्य कहा है, और इसी प्रकार के युक्त गुणों से युक्त वाक्यों के समूह को 'महावाक्य' नाम दिया है।''[9] आचार्य विश्वनाथ का 'महावाक्य' ही आधुनिक भाषा विज्ञान में 'प्रोक्ति' कहलाता है।

वाक्य–रचना में पदक्रम

निर्विवाद रूप से सार्थक शब्दों का व्याकरणिक पदक्रम में सामूहिक संरचना ही वाक्य है और वाक्यों में पदक्रम के व्याकरणिक अनुशासन के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। विश्व की अलग–अलग भाषाओं में पदों के सुव्यवस्थित निर्धारण की स्थिति भिन्न–भिन्न दिखलाई पड़ती है। अतः वाक्य में पदरूपों की स्थिति का विश्लेषण अपेक्षित होगा। ''पदक्रम की दृष्टि संसार की भाषाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है– (क) परिवर्तनीय पदक्रम, (ख) अपरिवर्तनीय पदक्रम।''[10] संस्कृत, संताली, ग्रीक, फारसी, जर्मन आदि श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ परिवर्तनीय पदक्रम वाली भाषाएँ मानी जाती हैं। इन भाषाओं में विभक्ति पद मूल शब्दों के साथ जुड़े रहते हैं और पदों के स्थान परिवर्तन के बावजूद भी इनके अर्थ में परिवर्तन नहीं होता है। जैसे संस्कृत में 'रामः कलमेन लिखति' वाक्य के पदक्रम को 'कलमेन लिखति रामः' लिखा जाए तब भी अर्थ में भेद नहीं होता है। हिंदी और अंग्रेजी जैसी वियोगात्मक भाषाएँ जिनके कारकीय विभक्ति–चिह्न पद मूल शब्द से अलग लिखे जाते हैं, उनमें पदों का एक सुनिश्चित पदक्रम होता है। उदाहरण के लिए हिंदी वाक्य में यह पदक्रम कर्ता + कर्म + क्रिया पदों का है। जैसे– वह (कर्ता) पुस्तक (कर्म) पढ़ता है (क्रिया)।' इसी प्रकार अंग्रेजी में यह पदक्रम कर्ता + क्रिया + कर्म का है। यथा– भ्म तमंके इववाण् इन भाषाओं में पदक्रम के बदलने से अर्थ परिवर्तन आ जाते हैं। जहाँ तक खोरठा भाषा का प्रश्न है तो श्लिष्ट योगात्मक भाषा होने के कारण इनमें कारक और विभक्तियों के पद–चिह्न मूल शब्द के साथ लगे रहते हैं और इनमें पद परिवर्तनयता के गुण भी मौजूद हैं, किंतु हिंदी जैसी श्लिष्ट वियोगात्मक भाषा के अधिक संपर्क में होने के कारण अब इस भाषा में भी हिंदी की तरह पद अपरिवर्तनीयता के लक्षण दृष्टिगोचर हाने लगे हैं। पदक्रम में परिवर्तनीयता, अन्वय, पदलोप एवं आगम जैसे वाक्य–संरचना से जुड़े महत्त्वपूर्ण तत्त्वों की सविस्तार चर्चा हिंदी और खोरठा की पद–संरचना के तुलनात्मक अध्ययन के क्रम में होगी।

वाक्य–प्रकार

वाक्य–विज्ञान के अंतर्गत विश्व की विभिन्न भाषाओं में कई दृष्टिकोण से वाक्य–भेद करते हुए उनका अध्ययन–विश्लेषण करने का प्रचलन रहा है। इन विभिन्न वर्गीकरणों में निम्नलिखित प्रमुख हैं:

1. आकृति के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण।
2. रचना के आधार पर वाक्यों का वर्गीरकण।
3. अर्थ के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण।
4. क्रिया के आधार पर वाक्य का वर्गीकरण।
5. शैली के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण।

1. आकृति के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण

आकृति के आधार पर संसार की सभी भाषाओं के वाक्यों को प्रमुखतः तीन वर्गो में रखा गया हैः

(क) **अयोगात्मक वाक्यः** अयोगात्मक वाक्यों में पदक्रम निश्चित रहता है। चीनी भाषा में अयोगात्मक वाक्य के उदाहरण मिलते हैं। यथा– ''ता जेन (बड़ा आदमी), जेन ता (आदमी बड़ा है)''।[11]

(ख) **श्लिष्ट योगात्मक वाक्यः** श्लिष्ट योगात्मक वाक्यों में प्रकृति (धातु एवं प्रतिपादिक शब्द) तथ प्रत्यय (विभक्ति चिह्न वाले पद) आपस में जुड़े रहते हैं। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, ग्रीक एवं जर्मन भाषाओं में श्लिष्ट योगात्मक वाक्य होते हैं। यथा– सः पुस्तकम् पठसि।'

(ग) **अश्लिष्ट योगात्मक वाक्यः** अश्लिष्ट योगात्मक वाक्यों में अर्थ तत्त्व और संबंध तत्त्व वाले शब्द आपस में घनिष्ठ रूप से मिले नहीं होते हैं। ''तुर्की भाषा में इसके उदाहरण मिलते है। जैसे एल–इम–डे–की (म्स. पउ.कम.ाप) (मेरे हाथ में है, एल–हाथ, इत–मेरा, डे– में, कि– होना)''।[12]

(घ) **प्रश्लिष्ट योगात्मकः** ''ऐसे वाक्यों में प्रकृति और प्रत्यय इतने अधिक घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं कि पदों को पृथक कर पाना कठिन होता है। पूरा वाक्य एक शब्द सा हो जाता है। जैसे दक्षिण अमेरिका की चेरोकी भाषा में– नाथोलिनिन (हमारे पास नाव लाओ।''[13]

रचना के आधार पर वाक्य–भेद

रचना अथवा गठन के आधार पर वाक्य के तीन भेद किए गए हैं– सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य।

(क) **सरल वाक्यः** सरल वाक्य में एक उद्देश्य एवं एक विधेय होता है, तथा एकाधिक क्रिया होने के बावजूद एक ही क्रिया की प्रधानता हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। ''जिन वाक्यों में एक मुख्य क्रिया हो उन्हें सरल वाक्य कहते हैं।''[14] जैसे– 'राधे आम खाता है।' 'अमित खाकर स्कूल जाता है।' दूसरे वाक्य में एक मुख्य क्रिया और एक पूर्वकालिक क्रिया होने के बावजूद प्रधानता एक ही क्रिया की है, अतः इसे सरल वाक्य ही माना जाएगा।

(ख) **संयुक्त वाक्यः** संयुक्त वाक्य में दो उपवाक्य किसी एक योजक पद के सहारे होते हैं। ''जहाँ दो या दो से अधिक उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय पद से जुड़े होते हैं, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।''[15] जैसे– 'वह बाजार गया और उसने केले खरीदे।' 'उसने तेज दौड़ लगाई किंतु ट्रेन छूट गई।' 'बरसात आ गई वरना मैं घर पहुँच जाता।' संयुक्त वाक्य में दोनों उपवाक्य अलग होन पर स्वतंत्र अर्थ देने में सक्षम होतें है। संयुक्त वाक्य में उपवाक्य और, अथवा, अन्यथा, वरना, परंतु, नहीं तो आदि योजक पदों के सहारे जुड़े होते हैं।

(ग) **मिश्र वाक्यः** मिश्र वाक्य में एक प्रधान और एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य होते हैं। ''जिन वाक्यों की रचना एक–से अधिक ऐसे उपवाक्यों से इुई हो, जिनमें एक उपवाक्य प्रधान और अन्य गौण हों, उन्हें मिश्र वाक्य कहते हैं।''[16] जैसे– 'मैनेजर ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।' 'हिरण ही ऐसा पशु है, जो कुलाँचे भरता है। मिश्र वाक्य में उपवाक्य अर्थ की दृष्टि से एक दूसरे पर आश्रित रहते हैं और स्वतंत्र हाने पर स्पष्ट अर्थ देने में सक्षम नहीं होते हैं। मिश्र वाक्य में जो, जिसकी, उसकी, किसकी, जिसने, उसने आदि योजक पदों के सहारे उपवाक्य आपस में जुडे होते हैं।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य–भेद

अर्थ अथवा भाव (Mod) के आधार पर वाक्य के आठ भेद किए गए हैं:

(क) **विधानवाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों में किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं।''[17] उदाहरण के लिए हिंदी में 'सरवन पढ़ता है,' 'सुनीता नाचती है,' वाक्य को विधिवाचक या विधानवाचक वाक्य कहा जाएगा, क्योंकि इन वाक्यों में राम के पढ़ने और सीता के द्वारा नाचने क्रिया की पुष्टि हो रही है। खोरठा में– 'मंगरा नाचो हइ,' 'लखिया कांगो हइ,' आदि।

(ख) **निषेधवाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों में किसी कार्य के निषेध (न होने का) बोध होता हो, निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।''[18] ऐसे वाक्यों को नकरात्मक वाक्य भी कहते हैं। जैसे– 'आज मैं नहीं पढ़ूंगा।' 'आभा नहीं खेलेगी।' खोरठा में– 'सोमा नाय जा हइ,' 'फुलवा नाय गावो हइ,' आदि।

(ग) **प्रश्नवाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाए अर्थात् किसी से कोई बात पूछी जाए, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।''[19] यथा– 'तुम लिखने कब जाओगे?', तुम खाते हेा?' इसी प्रकार यदि खोरठा भाषा की बात की जाए तो हिंदी की तरह इस भाषा के प्रश्नवाचक वाक्यों के रूप इस प्रकार मिलेंगे– 'बढ़ना का जा हइ?', संगीता ताको हइ?' आदि।

(घ) **विस्मयादि वाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों में आश्चर्य (विस्मय), हर्ष, शोक, घृणा आदि के भाव व्यक्त हों, उन्हें विस्मयादिवाचक वाक्य कहते हैं।''[20] जैसे– 'शाबाश! तुम पास हो गए।' 'अहा! कैसा सुंदर दृश्य है।' खोरठा भाषा में– 'अरे! तोञ एते बेस खाना बनइले ही!' 'अरे वाह! सोमरा ऐते मिठ बजको हइ' आदि।

(ड़) **इच्छावाचक वाक्यः** ''वक्ता की इच्छा, आशा या आशीर्वाद को व्यक्त करने वाले वाक्य इच्छावाचक कहलाते हैं।''[21] जैसे– 'ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दें।' 'नया वर्ष मंगलमय हो।' खोरठा में 'भगवान तोरा ज्ञान देथुन', 'तोर बुधिया सुधरौ,' आदि।

(ङ) **संकेत वाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों से एक क्रिया पर दूसरी क्रिया के निर्भर होने का बोध हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।''[22] (नव74) इन वाक्यों से कारण, शर्त आदि का बोध होता हैं जैसे– 'यदि वर्षा होती तो खेती अच्छी होती।' 'तुम परिश्रम करते तो पास हो जाते।' खोरठा में– 'आज सुगिया पढ़ल होत लै, तो जरूर पास हो जइतलै,' आदि।

(च) **संदेह वाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों में कार्य के होने में संदेह या संभावना को बोध हो, उन्हें संदेह वाचक वाक्य कहते हैं।''[23] जैसे– 'शायद राम पटना जाएगा।' संभवतः आज बारिश हो।' खोरठा भाषा में– 'मदन पेपर पढ़इत हतइ।' 'छऊवा कांदइत होतइ,' आदि।

(छ) **आज्ञा वाचक वाक्यः** ''जिन वाक्यों में आज्ञा या अनुमति देने का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे– 'आप बोलिय मत।' अंग्रेजी में Shut your mouth. खोरठा भाषा में– 'तोञ मत बोल ।' 'तोञ जो!', आदि।

क्रिया के आधार पर वाक्य

भेद– भाषा में वाक्यों को क्रिया के आधार पर भी वर्गीकृत करने का प्रचलन रहा है। विश्व की हर भाषा के वाक्य में सामान्य रूप से एक क्रिया की उपस्थिति अवश्य रहती है, किंतु कई वाक्य क्रियाविहीन भी होते हैं और वे सार्थक भी होते है। इस तरह क्रिया की उपलब्धता के आधार पर वाक्य के दो भेद किए जा सकते हैं: (क) क्रियायुक्त वाक्य और (ख) क्रियाविहीन वाक्य। अब इन दोनों भेदों का अलग–अलग विश्लेषण अपेक्षित होगाः

(क) **क्रियायुक्त वाक्यः** जिस वाक्य में एक या एक से अधिक क्रिया रहती है, उसे क्रियायुक्त वाक्य कहते हैं। इस प्रकार क्रिया–प्रयोग की दृष्टि से वाक्य की तीन स्थितियाँ पाई जाती है– एक स्थिति यह होती है जिसमें क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है, या क्रिया कर्ता केंद्रित होती है। दूसरी स्थिति में क्रिया कर्म केंद्रित होती है और तीसरी स्थिति में क्रिया भावकेंद्रित होती है। क्रिया का फल कर्ता, कर्म या भाव पर अलग–अलग

वाक्यों में अलग–अलग रूपों में पड़ सकता है। इसे ही वाच्य या (Voice) कहते हैं। वाच्य का अर्थ है बोलने का विषय। ''क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव, उसे 'वाच्य' कहते हैं।''[24] इस प्रकार क्रिया–प्रयोग की दृष्टि से क्रियायुक्त वाक्य तीन प्रकार के होते हैं:

1. **कर्तृवाच्यः** कर्तृवाच्य में कथन का केंद्र कर्ता होता है तथा कर्म गौण होता है। कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों हो सकती है। यथा– 'राजीव दौड़ता है (अकर्मक)। सीता पुस्तक पढ़ती है' (सकर्मक)।
2. **कर्मवाच्यः** ''जिस वाक्य में केंद्र–बिंदु कर्ता न होकर 'कर्म' हो, उसे कर्मवचाच्य कहते हैं। कर्म की प्रधानता के कारण ऐसे वाक्यों में या तो कर्ता का लोप होता है या कर्ता के बाद 'से' अथवा द्वारा का प्रयोग होता है।''[25] जैसे– 'द्वार खुल गया।' इस वाक्य में कर्ता का लोप है। 'रोहन के द्वारा कविताएं पढ़ी जाती हैं।' 'मुझसे यह भारी पत्थर उठाया गया।' इन दोनों वाक्यों में 'से' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग किया गया है।
3. **भाववाच्यः** ''जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर अकर्मक क्रिया का भाव प्रमुख हो, उसे भाववाच्य कहते हैं।''[26] अकर्मक वाक्यों में क्रिया हमेशा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक और अन्य पपुरुष में रहती है। यथा– सुरेन्द्र से चला नहीं जाता है।' 'अब तो कहा नहीं जाता।' भाववाच्य में कर्ता अथवा कर्म के स्थान पर भाव की प्रधानता होती है।

(ख) **क्रियाहीन वाक्यः** ऐसे वाक्य प्रायः संवाद वाले प्रसंग में मिलते हैं। यदाकदा प्रश्नोत्तर वाले पदों में भी क्रियाहीन पद वाले वाक्य मिल जाते हैं। यथा– 'हरेक माल दस रुपये।' मुहावरों वाले वाक्यांशों में भी क्रिया का अभाव होता है। यथा– 'आमदनी अठन्नी, खर्चा रुपैया।' विज्ञापन अथवा चेतावनी वाले वाक्यों में भी क्रिया का प्रयोग नहीं देखा जाता है। यथा– 'कुत्तों से सावधान!' घबराहट के क्षणों में मुख से निकले वाक्यों में भी क्रिया का अभाव पाया जाता है यथा– चोर–चोर!, साँप–साँप! आदि।

शैली के आधार पर

शैली के आधार पर वाक्य के तीन भेद किए गए हैं– 1 शिथिल वाक्य, 2 समीकृत वाक्य और 3 आवर्तक वाक्य। बिना चमत्कार या बिना कृत्रिम तरीके से सरल भाव से कहा गया वाक्य शिथिल वाक्य कहलाता है जैसे– एक किसान था। उसके चार पुत्र थे। चारो काफी मेहनती और ईमानदार थे।' ऐसे वाक्य मन में आए विचारों को सरल तरीके से शब्दबद्ध करते चले जाते हैं। समीकृत वाक्य सरल और दुर्बोध दोनो हो सकते है। इसमें मूल रूप से विचारों की संगति और संतुलन का सामंजस्य रहता है जैसे– 'जिसकी लाठी, उसकी भैस', 'जैसा राजा, वैसी प्रजा', 'न घर का न घाट का'। 'विद्वान प्रशंसा करें या निंदा करें, दोनों समान रूप से लाभकारी हैं', आदि। आवर्तक वाक्यों में कथनीय वस्तुएँ अंत में रखी जाती हैं ताकि श्रोता की उत्सुकता बनी रहे जैसे– यदि नारी की अस्मिता बचानी है, यदि नारी का सम्मान बढ़ाना है, यदि नारियों को सत्ता के शीर्ष तक पहुँचाना है तो उन्हें उच्च स्तर पर शिक्षित करना होगा।'

निष्कर्ष

भाषा विज्ञान की दृष्टि से हिंदी और खोरठा दोनों पदक्रम वाली भाषाएँ हैं और दोनों में वाक्य–रचना के आधार, अर्थ–आधार तथा क्रिया–आधार पर समान प्रकार के वर्गीकरण मिलते हैं। अंतर मुख्यतः रूपात्मक स्तर पर है– जैसे निषेध चिह्न, सहायक क्रिया, काल–प्रत्यय तथा ध्वन्यात्मक विविधता।

खोरठा, यद्यपि लोकभाषा के रूप में विकसित हुई है, तथापि उसका वाक्य–विन्यास सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषणीय है। हिंदी के साथ निरंतर संपर्क के कारण दोनों भाषाओं के वाक्य–विन्यास में पारस्परिक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी और खोरठा का तुलनात्मक वाक्य–विन्यास अध्ययन भारतीय आर्य भाषाओं की संरचनात्मक समझ को समृद्ध करता है और क्षेत्रीय भाषाई विविधता के वैज्ञानिक अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी, भोलानाथ (2022) *भाषाविज्ञान,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 1।
2. द्विवेदी, कपिलदेव (2024) *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 3।
3. दण्डी (2002) *काव्यादश,* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पृ. 1–4।
4. द्विवेदी, कपिलदेव (2024) *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 6।
5. शर्मा, देवेद्रनाथ (2005) *भाषाविान की भूमिका,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 176।
6. रॉविंस, आर. एच. (2004) *जेनरल लिंग्विस्टिक्स,* प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पृ. 1।
7. तिवारी, भोलानाथ (2024) *भाषा विज्ञान,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 21।
8. सिंह, देवेंद्र प्रसाद (2005) *भाषा विज्ञान और हिंदी का स्वरूप विकास,* जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 133।
9. द्विवेदी, कपिलदेव (2024) *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 107।
10. तिवारी, भोलानाथ (2024) *भाषा विज्ञान,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 295।
11. Steible, D. (1967) *Concise hand book of Lingustic,* Philosophical Library, Landon, 1967, p. 95.
12. वही, पृ. 95।
13. Robbins, R.H. (1967) *General Linguistic,* Longmans, Landon, 1967, p. 127.
14. पतंजलि (1962) *महाभाष्य,* चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, पृ. 29–30।
15. शर्मा, राजमणि (2000) *आधुनिक भाषा विज्ञान,* वीणा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 188।
16. तिवारी, भोलानाथ (2024) *भाषा विज्ञान,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 309।
17. शर्मा, राजमणि (2000) *आधुनिक भाषा विज्ञान,* वीणा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 191।
18. द्विवेदी, कपिलदेव (2024) *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 152।
19. शर्मा, राजमणि (2000) *आधुनिक भाषा विज्ञान,* वीणा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. पृ. 191।
20. वही, पृ. 163।
21. वही, पृ. 165।
22. तिवारी, भोलानाथ (2024) *भाषा विज्ञान,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 318।
23. शर्मा, राजमणि (2000) *आधुनिक भाषा विज्ञान,* वीणा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 195।
24. द्विवेदी, कपिलदेव (2024) *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 176।
25. वही, पृ. 179।
26. शर्मा, राजमणि (2000) *आधुनिक भाषा विज्ञान,* वीणा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 196।

****